प्रतिवेदन

विषय : 'विकसित भारत के लिए भारतीय ज्ञान परम्परा का योगदान'

11 जून, 2025, एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

संस्कृत विभाग, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा और उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ के संयुक्त तत्वावधान में एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का **'विकसित भारत के लिए भारतीय ज्ञान परम्परा का योगदान'** विषय पर 11 जून 2025 को सफल आयोजन सम्पन्न हुआ। इस गरिमामय आयोजन में 130 विद्वान् एवं प्रतिभागी प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित हुए, जबकि 14 प्रतिभागी ऑनलाइन माध्यम से से जुड़े।

संगोष्ठी का भव्य आरंभ ज्ञान की देवी माँ सरस्वती के सम्मुख दीप प्रज्ज्वलन एवं विश्वविद्यालय गान के साथ हुआ। संगोष्ठी सचिव, **श्री श्याम सुन्दर जी** ने प्रस्तावना प्रस्तुत करते हुए संगोष्ठी के आयोजन के मूल उद्देश्य को प्रतिपादित किया। उन्होंने स्पष्ट किया कि संस्कृत संस्थान, लखनऊ द्वारा संस्कृत के प्रचार-प्रसार एवं संवर्धन हेतु ऐसी संगोष्ठियों का आयोजन प्रत्येक जनपद में प्रस्तावित है। आगरा जनपद में इसका सफल आयोजन दयालबाग शिक्षण संस्थान के सहयोग से सम्पन्न हो रहा है यह हमारे लिए गौरव की बात है क्योंकि इस संस्थान की छवि सैद्धांतिक ज्ञान के साथ-साथ उसके क्रियान्वयन पर भी अमल करने वाले संस्थानों में की जाती है। **'विकसित भारत के लिए भारतीय ज्ञान परम्परा का योगदान'** इस विषय को चुनने का प्रमुख कारण यह है कि वर्तमान में भारत एक आर्थिक शक्ति के रूप में विश्व स्तर पर उभर रहा है, परंतु यदि हम अपनी मूल जड़ों, अपनी संस्कृति और अपनी धरोहर से विच्छिन्न हो जाएँगे, तो हम अवश्य ही पिछड़ जाएँगे।

उन्होंने समाज में बढ़ती उन घटनाओं का उल्लेख किया जो यह प्रदर्शित करती हैं कि धीरे-धीरे हम अपनी संस्कृति से कितनी दूर हो चले हैं। श्याम सुन्दर जी ने इस तथ्य पर बल दिया कि वेदों में केवल पारंपरिक ज्ञान ही नहीं, अपितु आधुनिक विज्ञान का भी अथाह भंडार है। वेदों में प्रत्येक प्रकार

की विद्याओं की परिकल्पना है और हमें उन्हें सम्यक् रूप से समझना और व्यवहार रूप मे लाना चाहिए। अपने नैतिक मूल्यों को जीवंत रखना भी हमारा प्रमुख कर्तव्य होना चाहिए।

उन्होंने कहा कि यह सौभाग्य की बात है कि हम प्रत्येक क्षेत्र में अग्रसर हो रहे हैं, परंतु जब तक हमारी भारतीयता, हमारा आध्यात्म, यहाँ तक कि हमारे यहाँ की सूक्तियाँ यथा 'अतिथि देवो भव' और 'मातृवान् पितृवान् आचार्यवान् पुरुषो' जैसे मूल सिद्धांत को आचरण का विषय नहीं बनाया जाएगा तब तक कुछ अधूरा ही रह जाएगा। हम अपने मूल से विस्मृत हो जाएँगे, तो हम पिछड़ जाएँगे। उन्होंने यह भी बताया कि गुरुजनों की सद्प्रेरणा से ही इस विषय को संगोष्ठी में प्रस्तुत किया गया है। मुझे इस यशस्वी मंच के माध्यम से सुखद एवं लाभप्रद पाथेय (मार्गदर्शन) प्राप्त होने की आशा है।

संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन के कुलपति प्रो० विजय कुमार मेनन जी। प्रो. मेनन ने अपने उद्बोधन में संस्कृत एवं भारतीय ज्ञान परंपरा की वर्तमान महत्ता पर सविस्तार प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि एक कालखंड में भारतीय ज्ञान परंपरा का विषय केवल संस्कृत के क्षेत्र में ही विचारणीय था। लगभग 300 वर्ष पूर्व पंडित जगन्नाथ के 'रसगंगाधर' के पश्चात् संस्कृत भाषा को तिरोहित करने का प्रयास किया गया, परंतु यह भी सत्य है कि जहाँ-जहाँ ज्ञान की ग्लानि होती है, उसके बाद पुनः चिन्तन उभरता है।

उन्होंने इस तथ्य पर बल दिया कि भारत स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूर्ण होने पर ‘अमृत महोत्सव’ के अवसर पर स्वयं को एक विकसित राष्ट्र के रूप में उपस्थापित कर रहा है और हम इसी कालखंड में विद्यमान हैं, यह हमारा सौभाग्य है।

प्रो. मेनन ने स्पष्ट किया कि 'विकास' केवल आर्थिक उन्नति तक सीमित नहीं है। इसमें कृषि, संचार, सेवा-क्षेत्र और नवाचार आज तीव्र गति से स्वयं को स्थापित कर रहे हैं। इसके साथ ही, सामाजिक समावेशन भी एक महत्वपूर्ण बिंदु है, जिसमें सभी को समान अवसर और 'सबका विकास' की दृष्टि से स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे क्षेत्र समाहित हैं। उन्होंने संवहनीय विकास (sustainable development) और सशक्त शासन व्यवस्था को भी विकसित भारत की आधारभूत संकल्पना का अंश बताया, जिसके द्वारा भारत स्वयं को वैश्विक नेतृत्व के स्तर पर प्रतिष्ठित कर सकेगा।

प्रो. मेनन ने वर्तमान में तीन प्रमुख विषयों - प्रथम 'विकसित भारत', द्वितीय 'NEP' (राष्ट्रीय शिक्षा नीति), और तृतीय 'IKS' (भारतीय ज्ञान प्रणाली) - पर अधिक चर्चा होने की बात कही। उन्होंने संस्कृत और भारतीय ज्ञान परंपरा को एक-दूसरे का पर्याय बताया, क्योंकि IKS का आधारभूत भाग संस्कृत भाषा के अधीन है। उन्होंने इस तथ्य पर खेद व्यक्त किया कि समाज में संस्कृत का अध्ययन वांछनीय था, परंतु उसे वंचित करने वाला एक ऐसा तंत्र निर्मित हो गया, जिसने इसे हाशिये पर धकेल दिया।

उन्होंने NEP से पूर्व 2015 में डॉ. एन. गोपाल स्वामी की अध्यक्षता में गठित समिति 'विजन एंड रोडमैप फॉर द डेवलपमेंट ऑफ संस्कृत' का उल्लेख किया। इस समिति ने यह निष्कर्ष निकाला कि संस्कृत भाषा और उसके विषयों को प्रयोगशाला में पहुँचाने की अपेक्षा केवल कर्मकांड की भाषा बना दिया गया है। प्रो. मेनन ने बताया कि संस्कृत वाङ्मय का केवल 5 प्रतिशत भाग ही कर्मकांड से संबंधित है, जबकि शेष पंचानवे प्रतिशत भाग प्रौद्योगिकी, दर्शन, इतिहास,ज्योतिष इत्यादि अनेक विद्याओं से संबंधित है। उन्होंने इस पर बल देते हुए कहा, "Need of the hour is to proud and investigate Sanskrit not worship it." अर्थात्, हमें संस्कृत पर गर्व करना चाहिए और उसका अन्वेषण करना चाहिए, न कि केवल उसकी अर्चना करनी चाहिए; अतः अब हमें अध्ययन पर बल देना है।

उन्होंने भारतीय ज्ञान परंपरा को द्विविध भागों में विभाजित किया- एक साहित्यिक (Literary) जिसमें शास्त्रीय ग्रंथ समाविष्ट हैं, और दूसरा गैर-साहित्यिक (Non-Literary) जिसमें प्रादेशिक भाषाएँ और मौखिक परंपराएँ सम्मिलित हैं। उन्होंने बताया कि भारत में मौखिक परंपरा से आगे बढ़ने वाला ज्ञान प्रत्येक ग्राम में उपलब्ध है, परंतु संरक्षण के अभाव इस प्रकार अनेक ज्ञान धाराएँ लुप्तप्राय हो चुकी हैं। प्रादेशिक भाषाओं का ज्ञान इसलिए आवश्यक है, ताकि वह ज्ञान आगे बढ़ सके। उन्होंने **'यतः अभ्युदय निःश्रेयस**

सिद्धिः स धर्मः' को भारतीय ज्ञान परंपरा का मूलभूत ध्येय वाक्य बताया, जिसका अभिप्राय है कि जिससे लौकिक उन्नति (अभ्युदय) और पारलौकिक कल्याण (निःश्रेयस) दोनों की सिद्धि हो, वही धर्म है। उन्होंने कहा कि हमारे यहाँ अभ्युदय और निःश्रेयस को समान रूप से ग्रहण गया है।

प्रो. मेनन ने ज्ञान परंपरा के दो मुख्य प्रकारों का भी उल्लेख किया- एक मूल परंपरा जिसमें धर्म के 14 विद्या स्थान (वेद, वेदांग, धर्मशास्त्र, पुराण व दर्शन इत्यादि) आते हैं, और दूसरी अन्य धार्मिक प्रणालियाँ जैसे जैन और बौद्ध इत्यादि। उन्होंने 'विद्' धातु का अर्थ 'ज्ञान' और 'प्रकाश' बताते हुए वेदों को समाज को प्रकाशित करने वाला प्रकाश-स्तंभ बताया। उन्होंने खेद व्यक्त किया कि वेदाधारित विज्ञान - एप्लाइड साइंस, इंजीनियरिंग, टेक्नोलॉजी, आर्किटेक्चर, एस्थेटिक्स आदि विषयों को हमने वेद से दूर मन और दूर रखा। उन्होंने कहा कि उपभोक्ता अर्थव्यवस्था (कंज्यूमर इकोनॉमी) से मोहित होकर हम वेदाधारित 'जीवन शैली' (मोड ऑफ लिविंग) से विछड़ गए।

उन्होंने ऋषियों की वैज्ञानिक दृष्टि का उदाहरण देते हुए कहा कि जब पाश्चात्य जगत् अरण्य में विचरण करता था, तब हमारे यहाँ नासदीय सूक्त का प्रणयन हुआ। हिरण्यगर्भ सूक्त और पुरुष सूक्त को उन्होंने समाज विज्ञान (सोशल साइंस) के विषय बताया। उन्होंने कहा कि 'गर्भोपनिषद्' में एक भ्रूण का उसके शैशवावस्था तक के विकास का विस्तार से वर्णन प्राप्त होता है। उन्होंने यह भी बताया कि प्राण चिकित्सा 'रेकी' का वर्णन 'ऋग्वेद' के एक मंत्र 'हस्ताभ्यां दशशाखाभ्यां जिह्वा वाचं पुरोवति' में मिलता है। उन्होंने 'लीलावती' और 'सुश्रुतसंहिता' जैसे उदाहरणों के साथ यह स्मरण कराया कि हमारे यहाँ काव्य और विज्ञान एक साथ समृद्धि को प्राप्त हुए हैं।

अंत में, प्रो. मेनन ने कहा कि संतोष का विषय यह है कि भारत अब संस्कृत को आत्मसात कर रहा है। उन्होंने भाषा की शक्ति का उदाहरण देते हुए **'ऑपरेशन सिंदूर'** से पूर्व भारतीय सेना के ट्वीट का उल्लेख किया, जिसका शीर्षक था **'प्रहाराय सन्निहिताः जयाय प्रशिक्षिताः'**। उन्होंने बल दिया कि एक राष्ट्र को अखंडित रखने और पूर्ण विकसित बनाने का सामर्थ्य संस्कृत में है। उन्होंने NEP को विज्ञान और संस्कृत के मध्य की दूरी को निश्चित रूप से मिटाने वाला बताया और लोगों को जागरूक करने के दायित्व पर बल दिया।

विशिष्ट वक्ता के रूप में उपस्थित रहे डॉ० राजीव द्विवेदी, निदेशक, वृन्दावन शोध संस्थान, वृन्दावन, मथुरा, ने अपने उद्बोधन का आरंभ इस तथ्य पर बल देते हुए किया कि सर्वप्रथम हमें स्वयं पर गर्व करने की प्रवृत्ति विकसित करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि 800 वर्षों की पराधीनता ने हमें जकड़ लिया है। उन्होंने मेनन जी की इस बात का पूर्ण समर्थन किया कि, संस्कृत को एक सोची-समझी क्रमबद्ध रीति से हटाया गया है। उन्होंने बताया कि जब अंग्रेज भारत आए, तब यहाँ ढ़ाई लाख गुरुकुल विद्यमान थे। तक्षशिला, नालंदा जैसे प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय थे, जो यह दर्शाते हैं कि हम आदिकाल से ही सभ्यता के चरमोत्कर्ष पर थे।

उन्होंने प्रयागराज संग्रहालय (इलाहाबाद म्यूजियम) में स्थित टेराकोटा गैलरी में रखे एक टेराकोटा पट्टिका (प्लेट) का उदाहरण प्रस्तुत किया, जिसमें हमारे शरीर का संपूर्ण पाचन-तंत्र चित्रित है। यह चौथी शताब्दी से पूर्व कौशांबी से प्राप्त गुप्त काल का एक अवशेष है और यह चिकित्सा शास्त्र के छात्रों के लिए अध्यापन हेतु एक उत्कृष्ट प्रतिरूप (मॉडल) हो सकता है। उन्होंने नासा (NASA) का उल्लेख किया, जो 100 वर्षों से अधिक पुराना नहीं है; जो हमें नक्षत्रों की जानकारी देता है, परंतु सूर्यग्रहण इत्यादि से संबंधित जानकारी तो हमें ऋषियों द्वारा बनाए गए पंचांग से भी प्राप्त हो जाती है, जो अत्यंत प्राचीन है। उन्होंने वृंदावन शोध संस्थान का भी उल्लेख किया, जहाँ तीस हजार से अधिक पांडुलिपियाँ संग्रहित हैं, जिनमें आयुर्वेद, ज्योतिष, ब्रज-साहित्य, बांग्ला-साहित्य, वैष्णव-संप्रदायों के एतिहासिक विवरण आदि विविध विषय समाहित हैं। द्विवेदी जी ने कहा कि हमें अपने प्राचीन ग्रंथों में मौजूद अपार ज्ञान का सदुपयोग जीवन को उच्चतर बनाने में करना चाहिए।

विशिष्ट अतिथि के पद पर आसीन रहीं, संस्कृत विभाग, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट आगरा की पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो० उर्मिला आनन्द जी ने अपने उद्बोधन में युवा वर्ग को भारतीय ज्ञान परंपरा का मुख्य आधार बताया। उन्होंने युवा वर्ग, चाहे वह स्त्री हो अथवा पुरुष, से आह्वान किया और उनसे प्रार्थना भी की कि वे यह संकल्प लें कि उन्होंने जो भारतीय ज्ञान की परंपरा प्राप्त की है, उसे अपने अंतर्मन में विकसित करें। उन्होंने 'अहं भाव' की संकीर्ण विचारधारा से निर्गत होने का आग्रह किया, क्योंकि देश की वर्तमान स्थिति में सर्वाधिक भ्रमित युवा वर्ग ही है।

उन्होंने भारत सरकार की 'विकसित भारत 2047' योजना का उल्लेख किया, जो स्वतंत्रता के शतवर्षीय समारोह के रूप में परिलक्षित होगी। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि जब तक युवा वर्ग संकल्प नहीं लेगा और उसे अपने आचरण में नहीं लाएगा, तब तक सैद्धांतिक रूप में बहुत कुछ कहा जाएगा और भाषण दिए जाएँगे, परंतु उसे क्रियान्वित करना और अपने जीवन में आचरणगत करना एक महत्त्वपूर्ण विषय है, जिसे हमें उपेक्षित नहीं करना चाहिए। उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति अपना प्रयास करेगा, तभी सामूहिक विकास संभव होगा; केवल एक के द्वारा यह संभव नहीं है। उन्होंने 'बूँद-बूँद से घड़ा भरता है' की उक्ति का स्मरण कराते हुए कहा कि यदि हम आज से ही संकल्प ले लें, तभी इस संगोष्ठी का प्रयोजन पूर्ण होगा। अतः, जो हम श्रवण कर रहे हैं, वे यह संकल्प लें कि हम संकीर्ण स्वार्थपरता से ऊपर उठकर देश और समाज के लिए चिंतन करेंगे।

विशिष्ट अतिथि के पद को अलंकृत कर रहे श्रीमन:कामेश्वर, मंदिर, आगरा के महंत श्री योगेश पुरी जी ने अपने उद्बोधन में यह प्रतिपादित किया कि इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन जैसे सूक्ष्म तत्त्व भी हमारे उपनिषदों

में वर्णित हैं। उन्होंने सृष्टि के विविध प्रकारों और अनेक गूढ़ सिद्धांतों का उल्लेख करते हुए वर्तमान में अध्ययन की प्रवृति को बढ़ाने पर बल दिया।

उन्होंने 'हृदय' शब्द का एक अत्यंत सुंदर निर्वचन प्रस्तुत किया और यह प्रश्न उठाया कि इसे 'हृदय' ही क्यों कहा गया, कोई अन्य नाम क्यों नहीं दिया गया। उन्होंने निदेशक, दायलबाग शिक्षण संस्थान की बात का समर्थन करते हुए कहा कि हमारे ऋषि-मुनि वस्तुतः पूर्व के वैज्ञानिक ही थे। उन्होंने हृदय को एक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया, जिसमें 'हृदय' शब्द के अक्षर ही उसके कार्य को पूर्णतः दृष्टिगोचर कराते हैं, यथा- यह अशुद्ध रक्त को ग्रहण करता है, उसे शुद्ध करता है और सम्पूर्ण शरीर में प्रवाहित करता है।

सम्पूर्ण कार्यक्रम के संरक्षक एवं संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा के निदेशक प्रो० सी. पटवर्धन जी ने प्रो. मेनन जी के भारतीय ज्ञान परंपरा से संबंधित विचारों की सराहना करते हुए दयालबाग में इसके व्यावहारिक कार्यान्वयन का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि प्रो. मेनन ने अनेक ऐसे बिंदु निर्दिष्ट किए थे जिन पर कार्य करना अपेक्षित है, और दयालबाग के प्रतिनिधि के रूप में उनका कर्तव्य है कि वे उन विषयों पर किए जा रहे कार्यों से अवगत कराएँ।

उन्होंने बताया कि दयालबाग में दिन का आरंभ प्रार्थना से होता है, जिसे 'प्रॉपर एड्रेस सिस्टम' पर सुना जाता है और प्रतिदिन लगभग बीस हजार लोग ऑनलाइन माध्यम से इससे जुड़े होते हैं। यहीं से नियमित दिनचर्या का आरंभ होता है। उन्होंने कहा कि आप सभी को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि

तीन सप्ताह की आयु से ही हमारे शिशु 'सुपरमैन रिवोल्यूशनरी स्कीम' से जुड़कर खेतों में पहुंचते हैं, चाहे तापमान कैसा भी हो। 80 वर्ष की आयु वाले वृद्ध भी दयालबाग में साइकिल से खेत जाते हैं और AC रहित घरों में हर अवस्था के लोग आनंदपूर्ण नियमित दिनचर्या व्यतीत करते हैं। इस जीवन शैली का लाभ भी उन्हें उच्चतर स्तर पर मिल रहा है। पी.टी. (शारीरिक प्रशिक्षण) के आदेश भी दयालबाग संस्था में, संस्कृत में ही दिए जाते हैं। विशेष दिवसों पर सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित होते हैं जिनमें भारतीय संस्कृति का प्रमुख रूप से दर्शन किया जा सकता है। इस प्रकार, भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) का बीजारोपण तीन सप्ताह के शिशु से ही हो जाता है। उन्होंने प्रातः एवं मध्याह्न के समय खेतों में आकर अवलोकन करने का आग्रह किया, क्योंकि यह प्रक्रिया वर्ष के 365 दिन संचालित होती है।

उन्होंने यह जानकर अत्यंत हर्ष व्यक्त किया कि भारतीय संस्कृति, विश्व के विविध धर्म, कृषि कर्म, समाज सेवा (सोशल सर्विस), और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ (को-करिकुलर एक्टिविटी) - ये सभी विषय 1991 में विश्वविद्यालय की स्थापना के समय से ही सभी विद्यालय एवं स्नातक स्तर के छात्रों के लिए अनिवार्य विषय हैं। IKS के अंतर्गत इतर विषयों को समझना आवश्यक है। उन्होंने एक व्याख्यान श्रृंखला (लेक्चर सीरीज) के आरंभ का उल्लेख किया जिसमें विभिन्न विषयों पर व्याख्यान होते हैं - यथा 'एन्शिएंट केमिकल साइंस', 'हिस्ट्री ऑफ ट्रेडिशनल इंडियन मैथमेटिकल' इत्यादि। भविष्य में इंजीनियरिंग, एस्ट्रोनॉमी, आर्किटेक्चर जैसे विषयों को भी समाहित किया जाएगा। उन्होंने इन विषयों की महत्ता पर बल देते हुए कहा कि गैलीलियो जैसे वैज्ञानिकों से पूर्व पाश्चात्य-विज्ञान को यह भी ज्ञात नहीं था कि पृथ्वी भ्रमण कर रही है अथवा सूर्य, जबकि हमारे भीष्म पितामह उत्तरायण-दक्षिणायन की चर्चा कर रहे थे।

उन्होंने मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार को बुद्धिमत्ता (इंटेलिजेंस) का एक प्रतिरूप (मॉडल) बताया, जो आजकल इस वाद-विवाद का विषय है कि क्या कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) इतनी शक्तिशाली हो जाएगी कि वह मानवता को अनावश्यक बना देगी। उन्होंने बताया कि इस प्रतिरूप का प्रयोग करके **AI की 'वैल्यू अलाइनमेंट'** समस्या को सुलझाने हेतु एक शोधकार्य (पी-एच.डी.) चल रहा है। एक अन्य शोधकार्य **'क्वांटम वैदिक सोसाइटी इंस्पायर्ड ऑप्टिमाइजेशन एल्गोरिदम्स'** पर हो रहा है। उन्होंने बताया कि पारंपरिक भारतीय प्रणाली (Traditional Indian system) के अनुसार ही 1915 से दयालबाग में इस प्रकार के तंत्र स्थापित हैं। यहाँ **'फैकल्टी ऑफ इंटीग्रेटेड मेडिसिन' 'आयुष'** के नाम से संचालित है।

IKS को किस प्रकार प्रोत्साहित किया जा रहा है, यह बताते हुए उन्होंने कहा कि **'स्कूल ऑफ आर्ट एंड कल्चर'** में 2-5 कक्षा के बच्चों को चार वर्ष के लिए पारंपरिक भारतीय संगीत (Traditional Indian music) सिखाया जाता है। 6-12 तक की कक्षा के बच्चों को **'स्कूल ऑफ लैंग्वेजेस'** में नौ भाषाएँ सिखाई जाती हैं। साथ ही, **'स्कूल ऑफ इंडियन म्यूजिक'** में सितार, तबला और गायन (वोकल) सिखाया जाएगा। ये सभी विद्यालय स्वयंसेवकों द्वारा सेवा के रूप में संचालित होते हैं, अतः सभी निःशुल्क हैं। निश्चित रूप से बच्चों को यहाँ जो मूल्य प्रणाली (वैल्यू सिस्टम) प्राप्त हो रही है, वह उन्हें एक विशिष्ट पहचान प्रदान करती है, जो पूर्णतः भारतीय ज्ञान प्रणाली एवं सामाजिक नियमों पर आधारित है।

संस्कृत विभाग, कला संकाय, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट आगरा के द्वारा इस संगोष्ठी का आयोजन किया।

कार्यक्रम का संचालन किया डॉ० गौरव कुमार गौतम ने किया।

धन्यवाद वितरण का दायितत्व-निर्वहन डॉ० अनीता, विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग ने किया।

दिवसभर चले विचार-विमर्श के पश्चात्, संगोष्ठी की संपूर्ति राष्ट्रगान के साथ हुई, जिसने राष्ट्रीय भावना को सुदृढ़ किया।

प्रतिभागियों एवं अतिथियों का सम्मान- सभी अतिथियों का सम्मान पटका पहनाकर एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर किया गया, जो भारतीय परंपरा में आतिथ्य सत्कार एवं कृतज्ञता का परिचायक है।

संगोष्ठी के समापन पर, सभी सक्रिय प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए, जो उनके योगदान एवं सहभागिता का प्रतीक थे।

यह संगोष्ठी भारतीय ज्ञान परंपरा के महत्त्व को रेखांकित करने तथा 'विकसित भारत' के निर्माण में इसके योगदान पर चिंतन-मनन करने का एक सफल मंच सिद्ध हुई।

निष्कर्ष - संगोष्ठी ने भारतीय ज्ञान परंपरा के महत्व को रेखांकित किया, इसे केवल कर्मकांड तक सीमित न मानकर विज्ञान, प्रौद्योगिकी, दर्शन और सामाजिक मूल्यों के एक विशाल भंडार के रूप में प्रस्तुत किया। वक्ताओं ने अतीत के गौरव को याद करने, वर्तमान में इसे अपनाने और भविष्य में 'विकसित भारत' के निर्माण में इसकी भूमिका पर जोर दिया। युवाओं को इस परंपरा को आत्मसात करने और उसे अपने आचरण में लाने का आहवान भी वक्ताओं द्वारा किया गया, ताकि भारत न केवल आर्थिक रूप से, बल्कि सांस्कृतिक और नैतिक रूप से भी समृद्ध राष्ट्र बन सके। दयालबाग शिक्षण संस्थान एवं दयालबाग सभा जैसी संस्थाओं के उदाहरणों ने भारतीय ज्ञान प्रणाली को व्यावहारिक रूप में कैसे लागू किया जा सकता है, इसका सुंदर उदाहरण प्रस्तुत किया।